18/07

नव परम्परा वादी युग → 1935-1990

इस युग को संक्रमण का युग भी माना जाता है।
व्यवहारवादी युग मे हुए नये शोध एवं प्रयोगो ने प्रयोगवादी व परम्परावादी विचारधारा को पुर्नपुर्नि स्थापित किया जिसके फल स्वरुप जिसके फल स्वरुप प्रशासन की नयी विचार धारा का सुत्र पात हुआ इस में औपचारिक विचार धारा को पुनिपुर्न स्थापित किया जिसके फल-स्वरुप प्रशासन की नयी विचार धारा प्रस्फुटित हुई।
संगठन की जिस स्थान पर मानवीय पहलुओ पर बल दिया जाने लगा। इस युग के प्रर्वतको का योगदान निम्न है।

जार्ज एल्टन मेयो →

उन्होने अपने साथियो प्रो एफ जे रो थलिस बर्जर तथा विलियम जे डिक्सन के साथ मिलकर इलेक्ट्रिक कम्पनी के शिकागो स्थित हथोर्न संयुक्त मे श्रमिकों पर 1924-1933 ई० के बीच कई प्रयोग किये उन्होने जिस विचारधारा को जन्म दिया उसे मानवीय विचारधारा के नाम से जाना जाता है।

Page No.
Date : / /

जो आगे चलकर प्रशासन के विचारधारा के इतिहास मे मील का पत्थर साबित हुआ

मेरी फार्कर फोलेट →

फोलेट को सम्बन्धो के मनोविज्ञान पर महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने कई महत्वपूर्ण विषयो जैसे नेतृत्व, रचनात्मक संघर्ष आदेशो का मनोविज्ञान तथा नियन्त्रण समायोजन, सहभागिता समझौता आदि पर अपने मूल्यवान विचार प्रकट किये। उन्होंने प्रबन्ध मे मेल जोल, 'समूह चिन्तन' तथा "नवीन प्रजातांत्रिक मूल्यो" अपनाने पर जोर दिया।

आधुनिक विचारधारा का युग - 1950 से अब तक (Modern thought era since 1950 to till now):—

1950 के बाद के क्षेत्र में विभिन्न विचार धाराओं के एकीकरण एवं संयोजन का दौर प्रारंभ हुआ तथा कई नवीन प्रवृतियों का भी विकास। इन प्रवृतियों की चर्चा निम्नलिखित है।

- **प्रणाली विचार धारा :—** यह विद्य विचार धारा संगठन को पृथक - पृथक विभागों, कार्यों एवं शाखाओं के संकलन के रूप में नहीं वरन ~~एकी~~ एकीकृत सम्पूर्णता संगठित इकाई या समन्वित पद्धति के रूप में मानती है।

- **संभाव्यता विचारधारा :** यह विचार धारा संपूर्ण प्रशासन को एक गणितीय मॉडल मानती है। ~~इसकी~~ यह विचार धारा मत है कि प्रशासन की कोई एक श्रेष्ठ विधी नहीं होती, वरन सब कुछ परिस्थिति पर निर्भर करता है। अतः किसी प्रशासक को वही मार्ग अपनाना होता है जो समय की मांग होती है।

- **गणितीय विचारधारा** यह विचार धारा संपूर्ण प्रशासन को एक गणितीय मॉडल

मानती है। इसकी यह मान्यता है। की संपूर्ण प्रशासन एक तार्किक प्रक्रिया है जिसे गणितीय संकेतों, सूत्रों, चिन्हों, समीकरणों अथवा काल्पनिक मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

• 7- एस मैकिन्सी मॉडल :—

इस मॉडल को थोमस पीटर्स, रोबर्ट वाटर मैन तथा रिचर्ड पास्कल आदि के साथ मिलकर मैकिन्सी ने यह मॉडल तैयार किया है। उके अनुसार संगठनात्मक प्रशासन सात घटकों - व्यूह रचना, प्रणालियाँ, स्टाफ, शैली, कौशल तथा आधिलक्ष्यों को जोड़ है। इसमें अन्तः निर्भरता का संबंध होता है। अतः किसी एक घटक में परिवर्तन होने पर सभी मे संयोजन आवश्यक हो जाता है।

• प्रबंध सूचना पद्धति :—

कंप्यूटर टैक्नोलॉजी के विकास के साथ ही प्रबंध में सूचना प्रणाली का महत्व बढ़ गया है। सूचना एक महत्वपूर्ण संसाधन बन गया है। यह ऐसी पद्दति है। जिसमें समंको का एकत्रीकरण, संग्रहण एवं प्रविधिपन किया जाता है। तथा सूचना के रूप में नियोजन, नियंत्रण एवं निर्णयन किये लिए प्रशासकों को उपलब्ध करवाया जाता है। दूसरों शब्दों में प्रबंध सूचना पद्दति मानवीय एवं कम्प्यूटर आधारित पूंजी संसाधनों का सम्मिश्रण है।

वैज्ञानिक प्रबंध की तकनीकें

(i) **क्रियात्मक फोरमैनशिप :**

टेलर ने क्रियात्मक संगठन को वैज्ञानिक प्रबंध का आधार माना है। उन्होंने इस प्रारूप को क्रियात्मक फोरमैनशिप का नाम दिया है। यह प्रारूप विशिष्टीकरण एवं श्रम विभाजन के सिद्धांत पर आधारित है। इसमें किसी संगठन में कार्यात्मक विशेषज्ञों का सदस्यों से प्रत्यक्ष संपर्क होता है। तथा प्रत्येक सदस्य को कई विशेषज्ञों से आदेश एवं निर्देश प्राप्त करने होते है।
प्रत्येक सदस्य को कई विशेषज्ञों से आदेश एवं निर्देश प्राप्त करने होते है।

(ii) **प्रमापीकरण :**

टेलर ने प्रबंधकों को यह सुझाव दिया कि यंत्रों, उपकरणों, सामग्री कार्य विधियों, कार्यदशाओं, संसाधनों आदि सभी के प्रमाप निर्धारित कर दिये जाने चाहिये। ये समस्त वैज्ञानिक अनुसंधानों, प्रयोगों व अवलोकनों के आधार पर निश्चित किये जाने चाहिये।

(iii) **प्रेरणात्मक मजदूरी प्रणाली :**

टेलर ने यह सुझाव दिया कि श्रमिकों को उनकी क्षमता एवं प्रयासों के

(iv

(v)

आधार पर पारिश्रमिक दिया जाना चाहिए। उन्होंने श्रमिकों को अधिक कार्य करने की प्रेरणा देने के लिये विभेदात्मक मजदूरी प्रणाली का प्रतिपादन किया। यह प्रणाली योग्य सदस्यों को अधिक मजदूरी प्रदान करती है। तथा अकुशल सदस्यों को कुशल बनने की प्रेरणा देती है।

(iv) **श्रमिकों का वैज्ञानिक चुनाव एवं प्रशिक्षण:**

टेलर का यह मत है कि कार्य के अनुसार ही सदस्यों का चयन किया जाना चाहिये ताकि सही कार्य पर सही व्यक्ति की नियुक्ति की जा सके। सदस्यों के वैज्ञानिक चयन के लिये मनोवैज्ञानिक एवं व्यावसायिक परीक्षण रखे जा सकते है। इसके अतिरिक्त कार्य के प्रति उनकी रुचि, योग्यता, प्रवृति, व्यक्तित्व आदि की भी जांच की जा सकती है।

(v) **कार्य का वैज्ञानिक वितरण:**

टेलर का यह मत था की जब तक कार्य का उचित वितरण नहीं किया जायेगा तब तक उस संगठन की क्षमता में वृद्धि नहीं की जा सकती है।

उन्होंने सदस्यों की रुचि और योग्यता को ध्यान में रख कर सही व्यक्ति को सही कार्य देने की वकालत किया। कार्य का वैज्ञानिक वितरण नहीं होने से एक ओर जहाँ लक्ष्य प्राप्ति में बाधा पहुँचाती है।

Page No.
Date: / /

प्रबन्धन में लूथर गुलिक का योगदान

लूथर गुलिक ने 1937 मे प्रशासन के 07 कार्य बताये इन कार्यो के लिए- POSDCORB (पोस्ड कोर्ब) शब्द का प्रयोग किया जिसे निम्नलिखित व्याख्यायित किया गया है।

शैक्षिक प्रशासन के 07 उद्देश्य

P - Planning (नियोजन)
O - Organizing (संगठन
S - Staffing (नियुक्तियाँ)
D Direction निर्देशन देना
CO Coordinating समन्वय करना
R Reporting - आलेख तैयार करना
B Budgeting - बजट बनाना

उपरोक्त सभी कार्य प्रबन्धन मे आते है।

⇒ प्रशासन के 14 सिद्धान्त का प्रतिपादन - हेनरी फियोल

⇒ प्रबन्धन का गुरु - पीटर ड्रकर को कहा गया

⇒ हेनरी फेयोल →

प्रबन्धन का हृदय → अभिप्रेरणा
प्रबन्धन का भविष्य → निर्णयन

प्रबन्धन में प्रमुख रूप से संसाधन दो होते हैं।

(I) भौतिक संसाधन (II) मानवीय

→ हेनरी फियोल को प्रशासन का पिता कहा जाता इन्होंने प्रशासन के पाँच तत्व माना है।

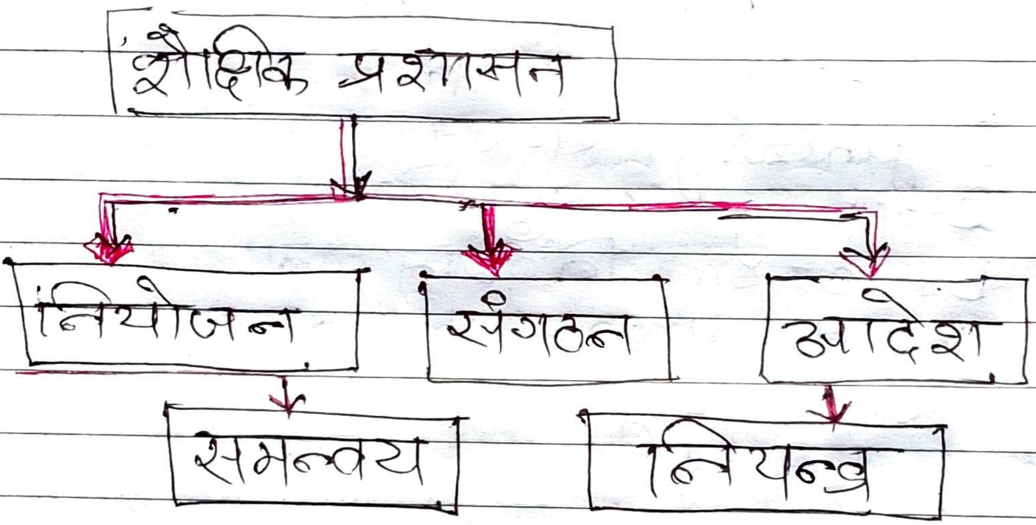

डॉ० वर्मा → शैक्षिक प्रशासन अपने प्रशासकीय तत्व के रूप में एक समन्वय कार्य निम्न है

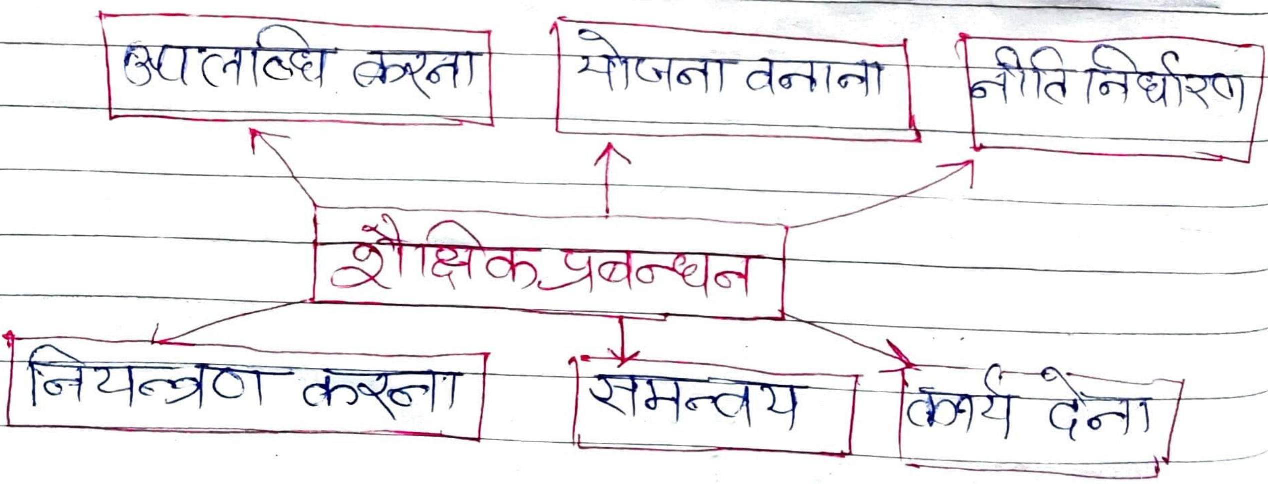

Page No.
Date: / /

शैक्षिक प्रशासन की विशेषताएँ -

Characteristics of Educational Administration

निम्न लिखित हैं।

(1) शैक्षिक प्रशासन एक समन्वित प्रक्रिया है। →

Education is Intergreded Process →

शैक्षिक प्रशासन की प्रकृति सम्बन्धित मौलिक तत्वों जैसे - नियोजन, संगठन, संचालन, समन्वय, नियन्त्रण आदि सभी सम्बन्धित हैं। एक दूसरे पर आधारित हैं।

अतः स्पष्ट है कि शैक्षिक प्रशासन की प्रकृति एक समन्वित प्रक्रिया के रूप में कार्य करती है।

(2) शैक्षिक प्रशासन एक सहयोगात्मक कार्य है

शैक्षिक प्रशासन एक सहयोगात्मक कार्य है। अतः एक प्रशासक को सहयोगात्मक रूप से कार्य करना चाहिए

(3) शैक्षिक प्रशासन को वैज्ञानिक बनने की आवश्यकता है।

(4) शैक्षिक प्रशासन एक सामाजिक प्रक्रिया है।

शैक्षिक प्रशासन की आवश्यकता
(Need of Educational Administration)

किसी भी राष्ट्र के प्रशासन की कुशलता का विकास, उस राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था से होता है।
और शिक्षा व्यवस्था की कुशलता शैक्षिक प्रशासन की कुशलता पर निर्भर करती है। जो निम्न हैं।

(1) शैक्षिक उद्देश्यो की प्राप्ति हेतु।

(2) शैक्षिक उन्नति हेतु।

(3) शिक्षा एवं समाज के लक्ष्यों की पहचान

(4) शैक्षिक नीति निर्धारण हेतु।

(5) शिक्षा कार्यक्रमो के नियोजन हेतु।

(6) नवीन विचारो का शिक्षा मे समावेश

(7) शिक्षा साधनो का उपयोग हेतु

(8) शैक्षिक कार्यक्रमो को प्रजातान्त्रिक बनाने हेतु।

Page No.
Date: / /

शैक्षिक प्रशासन का उद्देश्य व लक्ष्य

Mening OF Aims and Objectives of Education Administration

प्रशासन का प्रमुख उद्देश्य शैक्षिक प्रक्रिया को सुचारु एवं नियन्त्रण करना शिक्षा के अन्तर्गत उद्देश्य एवं लक्ष्य दोनो शब्दो का प्रयोग किया जाता है। परन्तु दोनो मे पर्याप्त अन्तर है। जो निम्न है।

लक्ष्य (Aims) → लक्ष्य का स्वरुप दीर्घकालीन होता है। लक्ष्य मानव को क्रिया करने को अभिप्रेरित करता है। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मानव एक या एक से अधिक अथवा अनेक उद्देश्य निर्धारित करता है।
लक्ष्य व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करता है।
और बिना लक्ष्य का मानव जीवन सफल नही हो सकता है।

उद्देश्य →(objective) उद्देश्य का स्वरुप अल्प कालीन होता है। उद्देश्य लक्ष्य प्राप्ति के लिए किया जाता है। यह दिशा का निर्धारण करता है।

शैक्षिक प्रशासन का सिद्धान्त

प्राचीन समय में सिद्धान्त का अर्थ प्रशासन के क्षेत्र मे सामाजिक मूल्यों से लगाया जाता था परन्तु वर्तमान मे प्रशासन के क्षेत्र में सिद्धान्त का अर्थो, उन उपकल्पना एवं एवं पूर्व कल्पना ओं के योग से होता है जिनके आधार पर नियमों की व्युत्पत्ति होती है। अर्थात प्रशासन से सम्बन्धित ज्ञान अथवा व्यवहार के किसी क्षेत्र की क्रमबद्ध व्याख्या को सिद्धान्त या नियम कहा जाता है।

हरबर्ट फेग →

सिद्धान्त पूर्व कल्पनाओं का समूह है इस प्रकार सिद्धान्त एक वृहत पूर्व कल्पित नियमो का समूह है।

करलिंगर →

सिद्धान्त सह सम्बन्धित तथ्यो का योग है, जिसके आधार पर किसी घटना चक्र के सम्बन्ध में क्रमबद्ध दृश्य उपस्थित हो सकता है। तथा उस घटना के व्यवहार के सम्बन्ध मे भविष्य वाणी की जा सकती है।

Page No.
Date : / /

शैक्षिक प्रशासन का विकास →

भारत में शैक्षिक प्रशासन के विकास का इतिहास अत्याधिक पुराना है। भारत में शैक्षिक विचारो की शुरुआत धार्मिक दृष्टिकोण से मानी जाती है। देश के प्रशासको ने शिक्षा में रुचि कम प्रदर्शित की है। सर्वप्रथम ईस्ट इंडिया कम्पनी ने 1813 के चार्टर एक्ट के पश्चात शिक्षा मे प्रचार-प्रसार का दायित्व स्वीकार किया तथा तथा तत्कालीन प्रशासन का लक्ष्य केवल यह देखना था कि देश में सम्पूर्ण शिक्षा के केवल एक लाख रुपये खर्च हो। 1813 के पश्चात जब शिक्षा केन्द्रीय विषय के रूप में उभरकर सरकार के समक्ष आयी तब सरकार ने इसमे रुचि लेनी प्रारम्भ की थी। 1854 वुड के घोषणा पत्र के पश्चात ही भारतीय शिक्षा प्रशासन के स्वरूप में परिवर्तन देखने को मिलता है।

अतः स्पष्ट है कि 1813-1921 तक शिक्षा प्रशासन केन्द्रीय विषय के रूप मे रहा है। तथा 1921 के पश्चात राज्य का एक विषय के रूप में मानी जाती है।